

ओम शांति,

बाबा ने हम सभी को ड्रामा का ज्ञान देकर बहोत चीजों में निरसंकल्प कर दिया। आज हम सभी मिलके चिंतन करेंगे कि ड्रामा को किस किस तरह यूज करें मन भी शांत हो जाए, सरलता आजाये। जैसे बाबा कि मुरली थी सन्डे को सबकुछ कल्याणकारी है, है सभी को? बाबा भी कहते हैं सब कुछ कल्याणकारी और हम भी मान लेते हैं सब कुछ कल्याणकारी है। जैसा बाबा ने भिन्न भिन्न परिस्थियों का वर्णन किया और हम सब भी जानते हैं जब परिस्थिति आती है तो कल्याणकारी लगता है या नहीं? तब क्या होता है? तब लगता है कि यह ना हो तो अच्छा है लेकिन जब सम्पूर्ण ज्ञान मिल गया और बाबा स्वयं केह रहे हैं कि सब कुछ कल्याणकारी है क्योंकि समय भी कल्याणकारी है, बाप भी और हम भी।

तो आज हम कम से कम आठ पॉइंट निकालेंगे सभी चिंतन करेंगे। ड्रामा को अपने जीवन में कैसे कैसे यूज करें? क्या क्या बातें उसकी याद रखें? संसार में जो आज तक ज्ञान दिया गया भक्ति में शास्त्रों में उसमें आत्मा के बारों में बहोत बातें कहीं। एक पुस्तक मुझे दी जो बहोत प्राचीन है भारत कि उसमें आत्मा के बारों में वोह सब बातें भी कही थी जो बाबा ने हमें बताया उस रीती को विद्वानों ने नास्तिक केह दिया। तो बहोत साड़ी बातें आत्मा और परमात्मा के बारों में अंस रूप में भी लिखी गयी लेकिन विश्व ड्रामा के बारों में? बहोत सारी चीजे लगभग लोप रही। बाबा ने आकर बहोत विशाल ज्ञान हम सब को सतयुग से लेकर संगमयुग तक दिया और कुछ रहस्य बताये। अब हम उन रहस्य को भी ध्यान में लायेंगे, प्रैक्टिकल में प्रयोग करेंगे।

किसी भी मनुष्य कि संगमयुग कि सफलता किस बात में है? किस बात में है हम सब कि जीवन कि सफलता? निश्चय में और किसमें? बताओ किसमें? जीवन हमें अपना भी अच्छा लगे, लगे कि यह जीवन सफल हो गया, ८४ जन्म सफल हो गए हमारे यहाँ आकर, हमारी स्थिति बहोत अच्छी हो, हमें ईश्वरीय सुख मिलता रहे, हमारा चित शांत रहे, बहोत कुछ होता है बहोत कुछ हो रहा है। व्यक्तिगत जीवन में हर एक के साथ होता है और संगठन में भी होता रहता है, दुनिया में भी होता है, सब कुछ होता है। कल परसों बाबा कि मुरली कर्म कि गति पर बड़ी गुह्य थी सुनी थी सब ने? सभी के हिसाब किताब चुकतू करने कि ईश्वरीय कारोबार भी वंडरफुल है। बाबा ने तो केह दी वोह बात आपने ध्यान दिया हो कि सब का हिसाब किताब ऊपर रहता है। बहोत बड़ा कंप्यूटर होगा शिवबाबा के पास तो !!! सब का हिसाब किताब ऊपर रहता है। बाबा ने अव्यक्त में तो कई बार कहा है बस बाबा तो बटन दबाएं और सब का जिसका चाहे देख सकता है। इसीको भक्ति में भी कहा कि ऊपर चित्रगुप्त के पास रहता है सब का हिसाब किताब और सब कि फाइल है उसके पास हर एक का लिखा रहता है। लेकिन कैसा सुंदर खेल है आटोमेटिक चलता है कर्म किया उसका फल मिलना ही है।

मेरी एक से चर्चा हो रही थी बहोत अच्छे डॉक्टर से - कर्म और उसका फल इसको सूक्ष्म रूप से यदि समजने कि कोशीश कि जाए मने पहले भी कही है यह बात जो डॉक्टर यहाँ बैठे हैं वोह उस पर विचार करें, चिंतन करें यह बड़ी अच्छी बात है। में डॉक्टर नहीं हूँ इसलिए सब कुछ मुझे पता नहीं है जो कुछ भी हम करते हैं, सोचते हैं, जैसी भावना रखते हैं सब कर्म जो हम जानते हैं कर्मन्द्रियों के द्वारा होता है कानो से हो आँख, मुख से हो वोह सब हमारे ब्रेन में भी सूक्ष्म नहीं स्थूल ब्रेन में तरंगों के रूप में प्रिंट होता रहता है। और हर एकट रियेक्ट करेगा, हर कर्म कि प्रतिक्रिया होगी ही। हम यहाँ हाथ मारते हैं तो जिसको भी मारा इस हाथ ने उसने भी प्रतिक्रिया कि दर्द हुआ पहली प्रतिक्रिया, दर्द में कई तरह कि चेंज हुयी जोर से चोट लग गयी। **हर कर्म कि प्रतिक्रिया होती है।** तो जो वेव ब्रेन में छप गयी उसका भी रिएक्शन होगा वोह कर्म का फल है। कब होगा वोह रिएक्शन? यह कोई जान नहीं सकता। कब उसके अनुकूल चीजे

मिल जाए वोह तरंग जो अंदर छप गयी वोह तरंग कब रियेक्ट करें इसको तो कोई जान नहीं सकता। किसी का पहले हो जाता है तो किसी का बाद में होता है और जिसके नहीं होंगे वोह बिलकुल अंत में होंगे जिसको धर्मराज पूरी कहेंगे, मानसिक सजाओ के रूप में जो आत्माएं भोगेंगी।

तो हम सभी ड्रामा के इस गुह्य ज्ञान को जानते हुए मेने इन सब चीजो पे तब से बहुत अच्छा चिंतन किया एक विदेश के अच्छे डॉक्टर ने मेरे से अचानक प्रश्न पूछा हु डिज़ाइन थी ब्रेन? इनको कौन बनाता है? कौन इसको सवरूप देता है? मेडिकल साइंस के अनुसार तो मापबाप लेकिन एक बिलकुल कम बुद्धि वाली माँ के गर्भ से एक बहुत बुद्धिवान बच्चे का जन्म होता है, एक बहुत बुद्धिमान माबाप से बहुत कम बुद्धि वाले बच्चे का जन्म हो जाता है। हम आत्मा कि बात को तो जानते है इन सब में आत्मा के वाइब्रेशन्स ही मुख्य काम करते है शरीर कि रचना में भी और ब्रेन कि रचना में भी।

तो ड्रामा का बहुत गुह्य ज्ञान दिया है बाबा ने। पहली बात - **हम कौन है ड्रामा में? एक्टर्स है, हीरो एक्टर्स है।** एक्टर्स के साथ हीरो एक्टर्स जोड़ दें एक और शब्द जो दें। हम हीरो एक्टर्स को जो सब से पहला शब्द प्रयोग करेंगे - कि मुझे अपने पार्ट का आनंद लेना है। वही एक्टर्स सफल होगा ना? जो पार्ट का खुद आनंद ले। तो सब आनंद लेंगे। एक गीत गाने वाला खुद आनंद ना ले रहा हो गीत का तो सुनने वाले तो बोर हो जायेंगे ना? उसको खुद एन्जॉय करना है अपने गाने को। डांस करने वाला कोई भी अपने डांस को खुद एन्जॉय कर रहा हो तो सारे देखने वाले भी भावविभोर हो जायेंगे। मैं एक्टर हूँ, हीरो एक्टर हूँ, मुझे अपने पार्ट को एन्जॉय करना है इसका आनंद लेना है, थिक है? अच्छे से अच्छा पार्ट बजाना है।

१) पहली बात **अपने पार्ट को एन्जॉय करना।** बहुत बड़ी बात है इसपे तो पूरी क्लास भी हो सकती है। अपने पार्ट को एन्जॉय करना। कभी कभी मनुष्य दुसरो को देख कर अपने पार्ट के एंजोयमेंट को छोड़ देता है। इनका बड़ा अच्छा भाग्य है कास यह मेरा भी होता तो बहुत अच्छा होता। तो जो अपना मिला हुआ है उसका आनंद भी नहीं ले रहे है। जैसे किसी को बहुत अच्छा मकान हो लेकिन दूसरे को उससे भी अच्छा हो और वोह उसके सुंदर मकान को देखकर परेशान रहता हो और अपने मकान का सुख भी भूल जाए ऐसा इस संसार में बहुतो के साथ हो रहा है। चिंतन करेंगे बहुत अच्छी तरह जहाँ हम है गरीबी में है, बीमार है, कम बुद्धि है, देखने में अच्छा पार्ट नहीं है, कम पढ़े लिखे है और कोई हलकी बात है। अब बुद्धिमानी उसमें कि उसी में रहते हुए उसको एन्जॉय करें उसका आनंद ले। आकांक्षाएं जिन्हे मनुष्य कहते है, कामनाएं जिसे कहते है जो मनुष्य को उसके पार्ट का आनंद नहीं लेने देती उससे हम जरा ऊपर निकल जाए। जो मिला है वोह बहुत ज्यादा है, क्या मिला है? क्या मिला है? स्वयं भगवान्। सोचो, अगर हम इस नशे में आजाये तो हमारी गरीबी का कोई महत्व रहेगा? हमें लगेगा हम पढ़े लिखे नहीं है? स्वयं भगवान् मिले, साथ दे रहा है, हमारा साथी बन गया ना? इस एंजोयमेंट से जीवन का आनंद लेंगे। सभी सोचेंगे। फिर आपके सामने एक संकल्प रख रहा हूँ हर एक अपने जीवन को देखकर विचार करें मुझे अपने जीवन को कैसे एन्जॉय करना है? बीजी लाइफ है तो भी एन्जॉय करें।

पिछली कांफ्रेंस में एक डॉक्टर मेरे से मिला। ज्ञान लिया है, वोह जो बाहें थी उसने MD का एग्जाम दिया है और उसका फाइनल होना है मार्च में। उसकी लड़की किसी हायर एडजुकेशन के लिए को एग्जाम देरही है वोह दोनों ही बहुत टेंसन में आजकल। क्या करें? दोनों को एग्जाम देना है, दोनों

का उसी एग्जाम पर करिएर निर्भर करता है, दोनों ही टेंसन में है। तो पहली तो सिंपल बात उनको मेने भी कहीं कि - टेंसन में रहने से बौद्धिक क्षमता नष्ट होती है। यदि आप टेंसन में रहेंगी तो उस लक्ष्य को आप नहीं पा सकेंगी जो आपको पाना चाहिए। दूसरी बात मेने उनको यह कही कि एन्जॉय क्यूँ नहीं करते पढाई को एग्जाम को? जो कुछ है उसका आनंद ले तो सफलता भी आनंदकारी होगी। हम सब भी सिख लें हमारी बीजी लाइफ है हमें टाइम नहीं मिलता जो कुछ सिचुएशन हमारे सामने है हम एन्जॉय करें। खेल बना दें अपने कर्मों को और इसका तरीका एक ही हम अपनाएंगे जो हमारी कामये है एक्सपेक्टेशन है उनको छोड़ कर जो कुछ हमारे सामने है उसके अनुसार अपने को ढाल ले। कल हम बहोत फ्री थे तो एन्जॉय कर रहे थे, कल हम बहोत बीजी हो गए तो यह सोच सोच कर कि बहोत बीजी है हम अपने आनंद को नष्ट ना करें। चेंज करें परिस्थियों के अनुसार अपने मन को, उसी अनुसार अपने मन को ढाल लें। बहोत काम, बहोत एंजोयमेंट, हो सकता है? हो सकता है। काम भी बढ़ेंगे सेवाएं भी बढ़ेंगी। एक समय था मुरली में बाबा ने कहा टीचर्स बहने को - कि तुम एक एक को दस दस सेंट्स सँभालने पड़ेंगे। बहने सोचने लगी एक ही संभालना मुस्किल है तो दस सँभालने होने तो क्या होगा हमारा? देखो बहने दस तो छोडो उससे भी ज्यादा संभाल रही है क्यूँकि दूसरे साथी मिल जायेंगे ना? सेवा बढ़ेगी साथी मिलते जायेंगे। हमें यह कला केवल सिख लेनी है।

2) दूसरी पॉइंट आगे चले ड्रामा कि दूसरी पॉइंट बोलेंगे बहने बोले? बोलो? सिंपल सिंपल बातें है आप सब जानते है - बाबा ने ड्रामा के बारें में एक बहोत अच्छी बात कही कि **ड्रामा में एक सीन एक बार हो गया वोह पांच हजार साल में दोबारा नहीं होगा।** उसे रिपीट होने के लिए कितना साल लगेगा? पांच हजार साल। तो मैं एक को यह बात बता रहा था तो उसने बहोत अच्छा कहा - पांच हजार साल के बाद देखेंगे, पांच हजार साल तो आराम से रहे। कितना अच्छा विचार था मुझे बड़ा अच्छा लगा। एक भाई से बात हो रही थी उसने कहा - पांच हजार साल से पहले वोह घटना रिपीट होगी ही नहीं, पांच हजार साल तक हो हम आनंद ले ना? तो ड्रामा चल रहा है। फिल्मे भी जो बनती है मेने तो देखि नहीं पर लोग कहते है कि सीन जल्दी जल्दी बदलते है। ऐसे नहीं कि एक सीन तिन घंटा चलता रहेगा, दस मिनट चलेगा ऐसा भी नहीं ना? कम से कम चलता है। तो सब कुछ गतिमान है ना? क्या सीखते है हम इससे? इसको जाने दें, यह जा रहा है इसको जाने दें, हमारी आदत क्या है? पकड़ के रखने कि बस इस आदत को जरा थिक करें फ्लेक्सिबल हो जाए। जा रहा है उसको जाने दें ना। बस में चलते है, ट्रेन में चलते है ट्रेन जा रहा है हम यह थोड़ी ही सोचते है कि ट्रेन खड़ी करो अच्छा सीन है हम इसको देखते रहे। सब कुछ बीत रहा है, अपने को प्रैक्टिकल करें ड्रामा का बहोत अच्छा प्रयोग होगा। चिंतन करें ड्रामा गति मान है इसलिए वोह अपनी गति से चल रहा है इसको रोकेंगे नहीं। यह बात परेशान करती है या खुश? हंस रहे है सभी। परेशान करती है? खुश करती है। और कोई खराब चीज हो गयी हो तो? जब यह बाबा कि यह बात सुनते है कि ड्रामा रिपीट होता है तो परेशान हो जाते है कि जो हो गया वोह फिर होगा? भारी चीजे जो हो गयी है जीवन में, जो दुःख दायी हो गयी है, जिन्होंने भारी किया है वोह फिर रिपीट होगा? क्या सोचेंगे? रिपीट तो पांच हजार साल के बाद होगा कल थोड़े ही रिपीट होने जा रहा है और जब रिपीट होगा तब हमें थोड़े ही पता होगा कि यह रिपीट होगा। दोनों ही चीजे नहीं है इसीलिए रिपीट होगा पांच हजार साल बाद इसके लिए बाबा ने एक शब्द बोला नथिंग न्यू।

तो हर चीज को **नथिंग न्यू** से सरल करते चले। मेने कई बार सुनाया है बहोत लोग ऐसे पत्र

भेजते हैं क्वेश्चन क्या ड्रामा बदल सकता है मेरा? मेरा पार्ट । बहुत दुःख देखा इस जीवन में पांच साल दुखों में व्यतीत किये हैं अगर उसे याद भी करते हैं तो दिल बहल जाता है । बाबा को ऐसा कहो कि वोह सीन दोबारा ना आये और कुछ भले आजाये । सब के साथ कहीं ना कहीं ऐसा हो गया है? कि वोह घटना दोबारा ना हो तो बड़ा आनंद रहे । लोग मेरे से पूछते हैं एक तो ऐसा परिवार था जो कई बार फ़ोन कर चूका था - कुछ ऐसा तरीका है कि वोह सीन दोबारा ना आये? तो वोह भी जानते हैं और हम भी जानते हैं कि रिपीट होगा ही । फिर भी उनकी उत्सुकता देखकर मेने कहा कि तरीका है अगर तुम सचमुच उसे बदलना चाहते हो तो पूरा परिवार आजसे ही आठ घंटा योग करना शुरू करदो बस सीन बदल जाएगा । क्या बदल जाएगा? एक स्थिति बदल जायेगी ना? स्थिति बदल जायेगी तो उस सीन को स्वीकार कर लेंगे वोह भारी नहीं लगेगा । उनको लग रहा है उसकी छाया अब तक पड़ी हुयी है जीवन पर इसलिए भारी लग रहा है कि वोह ना हो ।

दूसरी बात एक बहुत अच्छी है उसको मेने बतायी कि कई जगह ऐसा हुआ है कि **यदि वोह ना होता तो यह भी ना होता, यह क्या? परमात्म मिलन ।** परमात्म मिलन हुआ है, प्राप्त करना था न उसको, उसके लिए बहुत तैयार करना था । एक ऐसा व्यक्ति आया बहुत साहूकार था उसका बड़ा दिवाला निकल गया उसका भी येही क्वेश्चन था कि वोह ना हो तो बहुत अच्छा है । दिवाले के बाद ही तो वोह ज्ञान में आया । उससे पूछा कि अगर तुम्हारे पास धन सम्पत्ति होती तो क्या तुम बाबा के पास आते? स्वीकार किया उसने कि नहीं आते । तो कितना अच्छा हुआ कि पैसा तुमसे हटा दिया गया और भगवान् मिल गया । सस्ता है ना भगवान्? अगर पांच दस करोड़ खर्च करके और नुकसान करके भगवान् मिल जाए । सस्ता हो गया ना? तो क्यों नहीं इस खुशी में रहा जाए कि जो मीला है उससे बढ़कर कोई चीज कीमती नहीं । जो चला गया जाने दो ।

आगे चले सोचो आप में खुद नहीं बताना चाहता था । और ड्रामा को कैसे यूज करेंगे? **ड्रामा कल्याण कारी है ।** बाबा ने बहुत अच्छी अच्छी बातें कही हुयी हैं - **अकल्याण के पर्दे के पीछे कल्याण छुपा रहता है ।** हम केवल उस पर्दे को हटाएं विवेक पूर्वक, मेपन का त्याग करके । अगर हम किसी सीन को स्वार्थ कि भावना से देखते हैं हमें लगता है ऐसा ना होकर ऐसा हो । जहाँ हम अपना भला देखते हैं लेकिन बाबा हमारा भला लॉन्ग टर्म में देखना चाहता है, दूर तक । अगर तत्कालीन भला हमारा हो जाए और लम्बे काल तक हमें कष्ट हो तो अच्छा नहीं रहेगा । इसलिए बाबा ने कई बार एक बहुत अच्छी बात कही है संदेशों में सुनी - **बच्चों के ९० परसेंट विघ्न तो बाप नष्ट कर दें है केवल १० परसेंट छोड़ते हैं तुम्हारे लिए ।** हम समझे इस बात को - १० परसेंट तो पार करके हमें अपने को शक्तिशाली बनाना चाहिए ना? तो सब कुछ कल्याणकारी हो रहा है । बाबा ने भी कहा ना कि कोई मर गया तो कल्याण है, एकसीडेंट हो गया तो कल्याण है, नुकसान हो गया तो कल्याण है, हम गिर गये फ्रैक्चर हो गया तो कल्याण है, किसी ने इंसल्ट करदी तो कल्याण है? है कल्याण । अब हम विवेक पूर्वक ध्यान दें अगर कोई हमारी इंसल्ट करता है तो कल्याण कब होगा? जब हम उसके इंसल्ट करने को आधार बना कर अपनी स्थिति को अचल अडोल करदें तो उसका इंसल्ट करना हमारे लिए बहुत कल्याण कारी हो जाएगा । तो हमें अकल्याण कि चीज को कल्याणकारी बनाना है, बनाना है अपने अच्छे चिंतन से । किसी ने इंसल्ट कि हमने चिंतन किया कि हमें इसी में अचल अडोल रहना है उसके इंसल्टिंग शब्दों को ख्याल करना ही नहीं है, उसपे चिंतन करना ही नहीं है । अपने चिंतन को ईश्वरीय

चिंतन कि और ले चलना है वोह हमारे लिए कल्याणकारी हो जाएगा ना? दूसरे के इंसल्ट को सरलता पूर्वक लेना है तो कल्याणकारी हो जाएगा ना?

अगर हम इतने सेंसिटिव बन गए आप सोचो ऐसे व्यक्ति कि आप स्थिति देखो जो बहुत सेंसिटिव है, सेंसिटिव माना बड़ा नाजुक हो गया है कि मुझे कोई कुछ कहे नहीं तो मेरी स्थिति बहुत अच्छी रहे । एक कोटरी में तुम्हे बंध कर दिया जाए तो कोई तुम्हे कुछ नहीं कहेगा और उसकी स्थिति अच्छी रहती है । यह थिक है या एक व्यक्ति फील्ड में रहता है लोग बोलते है, लोग उसकी परीक्षा लेते है और वोह अपने ज्ञान और योग के बल से अचल अडोल हो जाता है कौन अच्छा रहेगा? क्योंकि जो व्यक्ति दर रहा है कि मुझे कोई कुछ कहे नहीं तो मेरी स्थिति अच्छी रहे कहने वाले तो उसे भी मिलेंगे । ऐसा नहीं हो सकता है कि उसके चाहने से उसे कोई कुछ कहेगा नहीं, उसके जीवन में परीक्षाएं नहीं आएँगी ऐसा हो सकता है? कि कोई बिना परीक्षा जिए ही आगे बढ़ जाए? MBA करलें, PhD करलें और एग्जाम देना ना पड़े सर्टिफिकेट मिल जाए ऐसा हो सकता है? और अगर ऐसा हो भी जाए तो जब उसे नौकरी मिलेगी तो होगा वोह सफल? बिना MBBS किये ही डिग्री मिल गयी MD कि क्या होगा उस डॉक्टर का? दो चार को मारके जैल में रहेगा ना फिर? तो फायदा क्या होगा उसका? हमारी योग्यता के अनुसार ही हमें सब कुछ मिले ।

एक बहुत अच्छा चिंतन है - **हम बिना योग्यता के कुछ भी प्राप्त ना करें ।** जिनको बहुत अच्छा बनना है, जिन्हे महान बनना है, जिन्हे शक्तिशाली बनना है वोह इस तरह चिंतन किया करें - हमें मांग कर कुछ प्राप्त नहीं करना है, अधिकार से सब कुछ पाना है, अपनी योग्यताओ से सब कुछ पाना है, अयोग्यता से नहीं । हमें परीक्षाओ को पास करके शक्तिशाली बनना है, बिना परीक्षा दिए हुए कुछ प्राप्त नहीं करना है, थिक है यह चिंतन? तो ड्रामा कल्याणकारी है ।

और आगे चले ड्रामा कि एक बहुत गुह्य बात ड्रामा हमें पर चिंतन से भी मुक्त करता है कैसे? **ड्रामा का ज्ञान हमें परचिंतन से मुक्त करें ।** सिंपल सी बात है ना? हर एक आत्मा का पार्ट अपना अपना है । इसका सभी अच्छा प्रयोग करेंगे तो परचिंतन समाप्त हो जाएगा । परचिंतन से क्या नुकसान हो रहा है? क्या नुकसान हो रहा है? हमारी आत्मिक शक्तियां नष्ट हो रही है । सोचो अगर हमारा उल्टा चिंतन चल रहा है तो उसका उल्टा प्रभाव हमारी आत्मा कि खुशी को नष्ट कर रहा है । आत्मा कि खुशी और शक्तियां नष्ट होती है परचिंतन से । इसलिए बहुत अच्छी तरह ड्रामा कि बात को याद रखते हुए कि हर आत्मा का अपना अपना पार्ट है । साथ ही साथ एक और चिंतन अपने से करेंगे । बात करें अपने से, बहुत अच्छा तरीका है बात करनेका - क्या मेरे इस परचिंतन से मुझे या उस आत्मा को लाभ होगा? अपने से बात करनी है । क्या यह परचिंतन उस तक पहुँच रहा है? अगर यह शुभ चिंतन में बदल जाए तो दोनों को फायदा हमें भी और दुसरो को भी । ड्रामा का यह बहुत सुंदर ज्ञान यदि हम याद रखेंगे हर आत्मा को अपना अपना पार्ट मिला हुआ है, हर एक कि योग्यता के अनुसार उसको पार्ट मिला हुआ है ।

डायरेक्टर किसी एक्टर को पार्ट कैसे देगा? उसकी योग्यता के आधार पर । अगर हम थोड़ी देर के लिए सोच ले कि सुप्रीम डायरेक्टर ने हर आत्मा को पार्ट दिया है वोह तो कोई गलती नहीं कर सकता ना? उसे तो पैसा देकर भी रिझाया नहीं जा सकता कि मुझे हीरो पार्ट दे दौं । बिलकुल योग्यता के आधार पर सब को पार्ट मिला हुआ है । इसलिए दूसरे के पार्ट से ईर्षा ना करके हमें अपने मिले

हुआ पार्ट को ही बहुत अच्छी तरह बजाना चाहिए । जैसे ड्रामा में, फ़िल्म में किसी एक एक्टर को छोटा सा पार्ट दे दिया लेकिन वोह उसे बहुत सुंदर बजाएं तो डायरेक्टर क्या करेगा अगली फ़िल्म में? उसको और अच्छा पार्ट देगा ना? उसकी प्रोग्रेस हो जायेगी, उसकी प्रमोशन हो जायेगी । और अगर किसी को झाड़ू लगाने का पार्ट दिया हो और उसने आधा किया और आधा छोड़ दिया हो यह क्या मुझे पार्ट दिया है? डायरेक्टर सोचेगा यह फेथफुल आदमी नहीं है इसको अच्छा पार्ट नहीं देना चाहिए । हम सब भी अपने पार्ट को जितना सुंदर बजायेंगे हमारे पार्ट में और निखार आता जाएगा । हमें लगेगा हम भी हीरो पार्ट धारी है ।

और आगे चले इस ड्रामा के लिए दो बातें बहुत गूह्य कही है बाबा ने । अपने चित को शांत रखने के लिए इन बातों को भी बिलकुल अपने पास रख लें १) एक कहा **नो क्वेश्चन ।** क्या, क्यूँ, कैसे नहीं । जो कुछ हो रहा है वही एक्यूरेट है । इससे भी गहरी बात कहीं आश्चर्य भी नहीं । किसी भी पार्ट को आश्चर्यवत होक भी नहीं देखो । जो बहुत अच्छा पुरुषार्थ कर रहे है जो अपने चित को बिलकुल शांत रखना चाहते है वोह इस पर काम करेंगे । जो कुछ हो रहा है नेक्स्ट बात इससे जुडी हुयी जो बहुत गहरी है जिसको याद रखने से हम अनेक संकल्पो से मुक्त हो सकते है - **जो कुछ हो रहा है वही सत्य है, वही होना चाहिए ।** भगवानुवाच है यह । जो कुछ हो रहा है वही सत्य है, है या नहीं? बोलो क्या कहेंगे? सत्य है या नहीं? वही होना चाहिए? सोचलो अच्छी तरह, वही होना चाहिए? बहुत गहरी बात है । देखलो अपने जीवन कि रोज रोज कि घटनाओ को देखकर, रोज एक फ़िल्म बन रही है ना हर एक के जीवन में रोज एक फ़िल्म है । जीवन कि फ़िल्म तो छोडो रोज । कई बातें आती है जो कुछ हो रहा है वही सत्य है । कितने सीन आते है सामने जिसको देखकर हम चाहते है यह ना हो । मैं देखता हूँ बहुतो को आजकल कि बाबा पर गुस्सा आता रहता है कितना रॉयल गुस्सा होगा? बाबा यह क्यूँ नहीं कर रहा है? मैं तो केह देता हूँ कि एक राय लिख के भेजदों ना बाबा को एक । अपनी राय लिखो और बाबा को भेज दों बाबा भी मुस्कराता होगा ना?

तो बहुत अच्छी बात है भगवानुवाच कि- **मैं इस खेल को साक्षी होकर देखता हूँ वैसे ही तुम भी देखो ।** बहुत कुछ हो रहा है और बहुत कुछ होगा । आजकी मुरली कि लास्ट लाइन याद करो - कि संसार में दुखो के पहाड़ गिरने है तो सतयुग में सोने के पहाड़ खड़े हो जायेंगे । बाबा कहते है तुम्हारे दुःख है यह तो बहुत छोटे छोटे है दुखो के पहाड़ गिरेंगे, अथाह दुःख, दुःख कि जैसे बरसात होने लगेगी दुःख ही दुःख । और सतयुग में सोने के पहाड़ खड़े हो जायेंगे । ऐसी अचल अडोल अवस्था हम बनाएं कि जो कुछ होगा जो कुछ हो रहा है उसे साक्षी हो कर देखें तब हम बाप समान बनेंगे, तब हमारी स्थिति सम्पूर्णता के समीप पहुँचेंगी । तो बहुत अच्छी बात है सभी विचार करेंगे कि भिन्न भिन्न परिस्थियों में मुझे अपने मन को शांत रखना है । सभी अपने से बात करें यहाँ केवल ज्ञान चर्चा और चिंतन तक यह बात ना रहे जाए । इन सब बातों का प्रयोग करके हम अपने मन को शांत रखदें अच्छी मेहनत का विषय है । हम देखे कि हमारा शांत मन क्या क्या करता है, हमारी साइलेंस पॉवर क्या क्या चमत्कार करती है एक्सपेरिमेंट करें । सभी अपने जीवन को एक सुंदर लेबोरेटरी बना दें प्रयोग करें यह मन को शांत रखने से क्या क्या होता है? क्यूँकि जो आत्मा बहुत शक्तिशाली है, जो बहुत ज्ञान युक्त है वही मन को शांत कर सकते है थिक बात है या नहीं? नहीं तो अनेक चीजे भूल जाती है । एक केह रहे थे भाई कि बाबा ने आज कितनी अच्छी बात कहीं ड्रामा का हर सीन कल्याणकारी है । पर भाई

जब परीक्षा आती है तब भूल जाता है। याद रहे परीक्षा के समय एक बच्चे ने बहुत मेहनत कि सारा साल और परीक्षा हॉल में जा कर बैठा और देखते ही सब कुछ भूल गया क्या होता है सब जानते हैं ना? किसी किसी के साथ ऐसा होता है दर से भूल जाते हैं। जो याद था वोह भी भूल जाते हैं कुछ का कुछ उतर देने लगते हैं। आपने देखा होगा जो हायर कम्पीटिशन दी है जिन्होंने उसमे यह नो यह टिक करना होता है ना? उनसे पढ़ा ही नहीं जाता घभरा इतने जाते हैं कि ऊपर कि लाइन दिख रही है या निचे कि? टिक ऊपर पे लगाना है और लगा दिया निचे घभराहट से। परीक्षा के समय निर्भय रहना, परीक्षा के समय अपने में विश्वास को कायम रखना, धैर्यचित होकर रहना यह बहुत बड़ी कला है। सभी सिख लें परीक्षाएं तो सब को देनी है क्योंकि गॉडली मिसनरी जो है हिसाब किताब चुक्त् करके कि वोह तेजी से चालू होगी ही सब को साफ करके बाबा को ले जाना है।

हम सभी बहुत चीजो को जानते हुए साक्षी होकर चित को शांत रखना सीखें। याद रखेंगे दो बातें सभी के ख्याल में रहे जब हमारा मन शांत होता है तब क्या क्या होता है? हमसे बहुत शक्तिशाली वाइब्रेशन्स चारो और फैलते हैं यह बात भूलना नहीं है। **जो अपने चित्त को शांत रखलें समझो वोह इस संसार को बहुत बड़ी चीज दे रहे हैं फिर सब कुछ हमारे नेचुरल संस्कार है प्यूरिटी, शांति, सुख, आनंद क्रिएट होता है हमसे और चारो और फैलता है और संसार कि आत्माओ को मदद करता है।** इसके लिए ही एक दृढ़ता पूर्वक अपने अंदर एक विचार बना लें कुछ भी हो जाए मुझे संकल्प शक्ति को नष्ट नहीं करना है। चिंतन करें एक दृढ़ता लाये। दो बातें है यहाँ भी ?) **एक यह है कि कुछ भी हो जाए अवस्था नहीं बिगाड़नी है।** बहुत काम आएगी यह धारणा अपने अंतर मन में इसको समाते चले। बहुत कुछ होता रहेगा जो हम चाहेंगे वोह नहीं होगा, नहीं चाहेंगे वोह होगा, जो कभी सोचा नहीं वोह परीक्षा जीवन में आजायेगी। यह सब के साथ होना है। कुछ भी हो जाए स्थिति नहीं बिगाड़नी है। यह संकल्प ही बहुत एफफेक्टिवेली काम करेगा, किसी ने कुछ केह दिया थिक है केह दिया, खराब बात थी हमने खराब सुनी उसने खराब बोली लेकिन स्थिति नहीं बिगाड़नी है वोह हमारी चीज है, वोह हमारे कण्ट्रोल में है। अपने मन को डिस्टर्ब नहीं करना, अपसेट नहीं करना, यह चीजे नहीं होजाना है, यह नहीं कि मन में बस तूफान चलने ही लगे। जब मन में बहुत तूफान चलते है तो बहुतो को एक ही संकल्प आता है यह अच्छा नहीं है। भगवान् क्या मिला दुखी हो गए हम तो। बोलते है लोग मेरे आगे बोलते रहते है नाजुकपन आगया हममे बहुत भूल गए कि हमें परीक्षा देकर बहुत शक्तिशाली बनना है। आज भी बाबा ने कहा **बाप आये है तुम्हे पढ़ा कर स्वर्ग का राज्य भाग्य दिलाने के लिए। जिनको स्वराज लेना हो सोचो वोह कमजोर होंगे?** वोह सोचेंगे कि हमें कोई कुछ केह ही नहीं? प्राइम मिनिस्टर सोचता है कि अखबारों में मेरी ग्लानि ना हो? सोनिया गांधी सोचती है यह सब तो बहुत ग्लानि कर रहे है मुझे यह पद छोड़ देना चाहिए? कलयुग के लोग भी यदि इतने शक्तिशाली रहते है यदि कुछ पाना है तो कुछ सुनना ही पड़ेगा। क्या हम नहीं सोच सकते? हमें सब कुछ पाना है वहाँ तो बहुत थोडा है। अगर हमें सब कुछ पाना है तो सब कुछ सुनना ही पड़ेगा, जो सुनलें वोह महान और जो ना सुने? वोह तो कमरें में बंध कर बैठ जाए कि कोई कुछ बोले ही नहीं। लेकिन कमरे में बंध हो जायेंगे हम अकेले भी हो जायेंगे तो भी हमारे अपने संकल्प और मच्छर भी हमें शांत नहीं होने देंगे। कैसे मनुष्य अकेला रहेगा उसको फील्ड में रहना है। तैयार है सभी? कुछ पाना है तो कुछ सुनना है। बोलो बहने तैयार है? या सुनाने के लिए तैयार है सुनने के लिए नहीं? सुनाना

तो सभी जानते हैं संसार में लेकिन सुनना? जो ज्यादा सुनाते हैं दुसरो को उनमें सुनने कि शक्ति समाप्त हो जाती है। इसलिए जिसको सुनने कि शक्ति और सहनशक्ति बढ़ानी है उन्हें सुनाने कि शक्ति को जरा कम यूज़ करना चाहिए। फटाफट सुनादेते हैं ना? किसी ने एक गलती कि सुनानी चाहिए एक बात सुना देते हैं दस मौका अच्छा मिल गया सुनाने का अंदर जो कुछ है वोह बहार निकलने का। इससे हमारी शक्तियां नष्ट होती हैं।

**तो सभी यह लक्ष्य बनाले कि ना तो स्थिति को बिगड़ना है ना संकल्प शक्ति नो नष्ट करना है,** करेंगे ड्रामा को यूज़? और अंतिम बात ड्रामा का सब से सुंदर सीन अब हमारे सामने है, केवल सामने ही नहीं हम भी उसमें है। कितना अच्छा है कि जब भगवान् संसार बदलने आया तब हम भी उसके साथ है। केवल देखने वाले नहीं एक्टर है उसने हमें अपना साथी बना लिया है, उसने हमें चुन लिया है कि मेरे योग्य तुम हो आजाओ मेरे साथ। इस बात का आनंद ले हम बहुत ज्यादा। तो हम ड्रामा में वर्तमान प्राप्तियों को देखते हुए अपनी प्राप्तियों कि एक लिस्ट बना लें सभी। आज ही एक भाई ने अपनी प्राप्तियों कि लिस्ट बतायी मुझे मेने उसे पूछा था क्या क्या मिला है बाबा से? सोचने लगा क्या मिला है? और उसको कुछ समज में नहीं आरहा है बाबा से क्या मिला है और हम दोनों बैठे और हमने लिस्ट तैयार कि बाबा से क्या क्या मिला है कितनी लिस्ट रही होगी वोह? पचास। पचीस तो बहुत पावरफुल चीजे जो बाबा से हमें मिली है और अगर हमें वोह याद रहे तो सदा हम इस भाग्य कि खुशी में रहेंगे ना कि कितना सुंदर ड्रामा है कि ड्रामा के अंत में भगवान् का साथ मिल गया।

जो कल्पनाएं थी वोह साकार हो गयी, जो चारो युगो में कभी नहीं देखा था वोह देखने को मिल गया। जब दादी ने शरीर छोड़ा आसपास के दिनों में मेने यहाँ भी वोह बात कही थी उसको भी यह नशा रहता होगा कि देखो हम कितनी सुंदर बातें देख रहे है दादी ऊपर पहांची तो प्रकृति के पांच तत्व देव स्वरूप में स्वागत करने आगये कितनी सुंदर बात थी? विदाई ले रही है वतन से जो इस संसार में कोई नहीं जान सकता और देख सकता वोह सब हमने जाना और देखा ना? कैसे बाबा ने उन्हें विदाई दी, प्रकृति के तत्व भी उन्हें विदाई देने आगये, ब्राह्मण भी विदाई देने आगये और स्वयं भगवान् सामने है तुम तो बड़े भाई हो उठो गले मिलो क्या सुंदर सीन? देखा ना सभी ने यहाँ से? गले मिले और लॉक करदिया। तो जो कुछ चारो युगो में नहीं देखा, नहीं सुना जो तीनो कालो में सम्भव नहीं वोह हम देख सुन रहे है ना? एक्ट कर रहे है ना? अपने इस महान पार्ट कि खुशी में आजाये सभी। अब भी देखेंगे ना बहुत कुछ? वोह सब कुछ देखेंगे जिसके लिए तपस्वियों के नैन तरसते है, जिसके लिए बड़े बड़े ऋषि मुनि रातदिन मन्त्र जाप करते है वोह सब हम देखेंगे और सुनेंगे। ऐसा अपना सुंदर भाग्य इस ड्रामा में देखते हुए सभी ड्रामा का यूज़ करें।

पांच स्वरूपों का अभ्यास चालू है या छूट गया? तो सभी इस पर ध्यान देंगे बहुत ज्यादा जो नहीं कर रहे हो सकता है वोह कम कर रहे हो। इसको और बढ़ाएंगे क्यूंकि इससे हमारे चित कि एकाग्रता बढ़ती है और जीवन में नए नए अनुभव होते है। इसको ढीला नहीं करना है बाबा रिजल्ट पूछेगा आते ही होम वर्क दिया था किस किस ने किया है? वोह पूछे ना पूछे इनाम तो साथ साथ मिल जाता है। साथ साथ श्रेष्ठ स्थिति और ईश्वरीय सुख इसका इनाम मिल जाता है। इसलिए बहुत अच्छी तरह लगन से जिसका छूटा हो? **बाबा ने क्या कहा था दिन में छूट जाए तो रात को पूरा करके ही सोना है।** दस मिनट दे दो एक्स्ट्रा एक एक मिनट में भी पांचो स्वरूपों का अभ्यास करके दस बार



## 02. Drama Ka Yatharth Rahsya

करके सो जाओ तो अगले दिन बहुत अच्छा अनुभव रहेगा ।

**ओम शांति ।**